B. A. Part - III
Philosophy Paper - V

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Verification Theory of Religious Language (Part - III)

(2) प्रसिद्ध समसामयिक धर्म विचारक जे० एस० फिलिप्स ने विटगेन्स्टाइन के प्रभाव में आकर धार्मिक कथनों की सत्यापनीयता के प्रश्न पर कुछ तथ्यों को प्रकाश में लाया है। फिलिप्स धार्मिक कथनों के सम्बन्ध में विटगेन्स्टाइन (Lectures And Conversations on Aesthetics Psychology and Religious Belief) के इस विचार को पूर्णतः स्वीकार करते हैं कि केवल धार्मिक जीवन पद्धति के सन्दर्भ में ही इन कथनों की सार्थकता की परीक्षा की जा सकती है। इनके विचार में धर्म से भिन्न किसी अन्य कसौटी के आधार पर सत्यापनीयता सिद्ध करने का प्रयास अथवा इसके कथनों का अर्थ समझने का प्रयास एक बहुत बड़ी भूल है। फिलिप्स के अनुसार धार्मिक कथन जिनके धार्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति होती है, वस्तुतः हमारी आस्था पर आधारित होते हैं। अतः इन्हें आनुभविक प्रदत्तों (data) के आधार पर सत्य - असत्य प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

इन विश्वासों को वैज्ञानिक प्राक्कल्पनाओं तथा सिद्धान्तों के समान मानकर इनका समर्थन अथवा खण्डन करने के लिए तथ्यात्मक प्रमाण खोजने का प्रयास व्यर्थ है।

वस्तुतः यह समीक्षात्मक विवेचन इस तथ्य को प्रकाश में लाने का प्रयास करता है कि अपने विशेष स्वरूप के कारण धार्मिक कथनों के साथ सत्यापनीयता का प्रश्न उठाना ही व्यर्थ एवं निरर्थक है।

(3) एक दूसरे वर्ग के विचारक सत्यापनीयता के सिद्धान्त को एक मनमानी कसौटी के रूप में स्वीकार करते हैं तथा इसके आधार पर धार्मिक कथनों की सत्यापनीयता एवं इस प्रकार इसके 'अर्थहीनता' की बात को स्वीकार नहीं करते हैं। इस क्रम में लेजरविन जैसे दार्शनिकों का नाम उल्लेखनीय है। लेजरविन ने अपने निबन्ध "The Positivistic use of Nonsense" में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि सत्यापनीयता की कसौटी के आधार पर किसी भी वाक्य को निरर्थक सिद्ध करना इसके अधिक और कुछ भी सिद्ध करना नहीं है कि ये कथन अर्थपूर्णता की एक कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि धार्मिक कथनों के साथ एयर के अर्थ में सत्यापनीयता की बात नहीं की जा सकती लेकिन इसके आधार पर इससे आपादित (implied) निष्कर्ष को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता कि धार्मिक कथन निरर्थक है।